ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO. 114-115
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

श्री सतीश कुमार गुजराल

विभावरी सिंह

असि0 प्रोफेसर– मूर्तिकला विभाग ललित कला संकाय ल0वि0वि0, लखनऊ, (उ0प्र0), भारत

सारांश : *श्री सतीश कुमार गुजराल समकालीन भारतीय कला की दुनिया में श्री सतीश गुजराल की एक विशिष्ट पहचान है। यदि हम उन्हें बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक प्रसिद्ध चित्रकार, मूर्तिकार, लेखक और वास्तुकार हैं। वे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल के छोटे भाई हैं। जब सतीश सर मात्र 8 वर्ष के थे तो पैर फिसलने के कारण इनकी टांगे टूट गईं और सिर में भी काफी चोट आई, जिसके कारण इन्हें कम सुनाई देने लगा। लोग इन्हें लंगड़ा, गूंगा, बहरा समझने लगे।*

सतीश गुजराल का जन्म 25 दिसम्बर, 1925 को ब्रिटिश इंडिया के झेलम में हुआ था। उन्होंने लाहौर स्थित मेयो स्कूल ऑफ आर्ट में पॉच वर्षों तक अन्य विषयों के साथ–साथ मृतिका शिल्प और ग्राफिक डिजाइनिंग का अध्ययन किया। इसके पश्चात् सन् 1944 में वे बाम्बे चले गये जहॉ उन्होंने प्रसिद्ध सर जे0जे0 स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला लिया पर बीमारी के कारण 1947 में ही इन्हें पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। सन् 1952 में उन्हें एक छात्रवृत्ति मिली जिसके बाद उन्होंने मैक्सिको के पलासियों नेशनल डि बेलास आर्ट में अध्ययन किया, यहॉ पर उन्हें डिएगो रिवेरा और डेविड जैसे सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ कार्य करने का मौका मिला और बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। इसके बाद उन्होंने यू0के0 के इंपीरियल सर्विस कालेज विंडसर में भी कला का विधिवत् अध्ययन किया।

आपने अपनी रचना यात्रा में कभी भी सीमा रेखा नहीं खींची और माध्यमों के क्षेत्र में व्यापक प्रयोग किये। रंग और कूची के साथ–साथ सिरामिक, काण्ठ, धातु और टेराकोटा में आपने हर जगह अपनी कलात्मकता का परिचय दिया।

कार्य शैली– सतीश गुजराल जी के चित्रों में आकृतियॉ प्रधान हैं, वे विशेष रूप से निर्मित खुरदुरी सतह पर एक्रेलिक से चित्रांकन करते हैं, तब ये आकृतियां एक दूसरे में विलीन हो जाती हैं और विभिन्न ज्यामितिय आकारों में स्थित हो जाती हैं। रंगों का परस्पर सौजन्य और फिल्टर से झरते हुए विभिन्न बिम्बों का आकर्षण उनके चित्रों की मोहकता तो बढ़ाता ही है, बिना हस्ताक्षर के भी आप उनकी कला को पहचान लेंगे। अपने जीवन में उन्होंने अमूर्त चित्रण भी किये हैं और चटकीले रंगों से सुन्दर संयोजन बनाये हैं। पशु–पक्षियों को उनकी कला में सहज स्थान मिला है। इतिहास, पुराण, लोक कथा, प्राचीन भारतीय संस्कृति और विविध धर्मों के प्रसंगों को उन्होंने अपने चित्रों में संजोया है। आज उनकी कलाकृतियां यू.एस.ए. तथा म्यूजियम ऑफ माडर्न आर्ट में संग्रहीत हैं तथा प्रदर्शित की गयी हैं।

गुजराल जी और उनके अभिभावकों ने विभाजन के समय कई लोगों की सहायता की थी, उनकी पूर्व की कलाकृतियां उनके जीवंत अनुभवों की ही देन है। सीमा के दोनों ओर से अपहृत महिलाओं का बचाने और उनके पुर्नवास में श्री गुजराल जी ने अहम भूमिका निभाई थी। एक प्रदर्शनी में घूम रहे एक कलाकार ने कहा कि यहॉ गुजराल की कलाकृतियों को क्रम में सजाया गया है, इन्हें देखकर कोई भी महसूस कर सकता है कि गुजराल ही भारत के एक ऐसे कलाकार हैं, जिनकी कला में विविधता है। गुजराल जी का विवाह किरण गुजराल से हुआ और दोनों भारत की राजधानी दिल्ली में रहते हैं। उनके पुत्र मोहित गुजराल एक प्रसिद्ध वास्तुकार हैं उनकी बड़ी बेटी अल्पना ज्वैलरी डिजाइनर हैं और दूसरी बेटी रसील एक इंटीरियर डिजाइनर हैं। इनके बड़े भाई इन्द्र कुमार गुजराल भारत के पूर्व प्रधानमंत्री थे। गुजराल जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी है। इसके अतिरिक्त आपके कार्यों और जीवन पर तीन और पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

म्यूरल– साठ के दशक में गुजराल जी ने म्यूरल क्षेत्र में काफी काम किया चंडीगढ़ की पंजाब युनिवर्सिटी दिल्ली के ऑडियन्स सिनेमा में म्यूरल 1962 में भारत ही नहीं, अपितु मारीशस और न्यूयार्क में भी आपके द्वारा बनाये गये म्यूरल अंकित हैं। न्यूयार्क का वर्ल्ड ट्रेड फेयर मारीशस का गॉधी संस्थान ओबराय होटल, उत्तर रेलवे दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय, मुंबई ओबराय टावर दिल्ली हाईकोर्ट आज भी सतीश गुजराल की रचनात्मकता को प्रस्तुत करते हैं।

स्थापत्य– साठ के दशक में ही सतीश जी को महसूस हुआ कि मेरी वास्तविक रचनात्मक की पहचान स्थापत्य में है, पर लगभग 10 वर्ष के उपरान्त स्थापत्य कला के स्वप्न को वह पूरा कर सकें। मेरठ ने मोदी हाऊस मारीशस में गॉधी संस्थान, मोदी हाऊस नई दिल्ली उसके बाद वेल्जियम एंबेसी नई दिल्ली गुजराल जी के स्थापत्य कला की पहचान है, इस बीच व वॉल चित्र एवं मूर्तिकला भी करते रहे। गुजराल जी इमारत को अपने सापेक्ष एक कला में बदल देना चाहते थे। इनके जीवन पर कई वृत्त चित्र बन चुके हैं। सतीश गुजराल जी पर एक फिल्म भी बन चुकी है। फरवरी 2013 में ब्रश विद लाइफ नाम से 29 मिनट की एक वृत्त चल चित्र भी जारी किया गया है।

कलाकृति की विशेषतायें– आपके चित्रों में आकृति प्रधानता है, जब वे विशेष रूप से चित्रण करते हैं तभी आकृतियां

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

एक दूसरे में विलीन होती हैं और विभिन्न विभिन्न ज्यामितिय आकृतियां एक दूसरे में विलीन हो जाती हैं और बिना किसी हस्ताक्षर के अपने चितेरे की पहचान कराती हैं। आपने अमूर्त चित्रण किये हैं, चटकीले रंगों के सुन्दर संयोजन बनाये हैं अपने चित्रों में जीव–जन्तु पशु–पक्षियों को भी सहज स्थान दिया है। आपके कार्य सहजता से ही पहचान लिये जाते हैं, चित्रों में चटक रंगों का प्रयोग बहुत ही सजीवता प्रदान करते हैं। प्राचीन पुराणों एवं भारतीय संस्कृति और विभिन्न धर्मों के प्रसंगों से प्रेरणा प्राप्त कर चित्रों का संयोजन किया है। मूर्तिकला में सिरामिक और ब्रान्ज में अधिक कार्य किया है। कास्ट द्वारा संयोजित कई म्यूरल भी प्रसिद्ध हैं, जिनमें जानवरों आदि के फिगर को सहजता से प्रयोग किया है।

सतीश गुजराल की कलाकृतियों में बड़ी–बड़ी कोठियां, इमारतें, लाल पीले, हरे, जामुनी उभरते चमकीले रंग पर पीड़ित व्याकुल आकृतियां एवं नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करती हैं। आपके चित्रों में रोजमर्रा की घटनायें एवं सामान्य जीवन को ही दर्शाया है। आपके चित्रों में हर्ष, पीड़ा, विषाद और संघर्ष की अभिव्यक्ति है। आपके द्वारा बनाये गये म्यूरल ब्मतंउपब ज्पसमए ज्मततंबवजजंए ठतवद्रम आदि द्वारा निर्मित हैं। इनमें लोक प्रतीकों के साथ–साथ भारतीय रंगों का समावेश है।

मैक्सिको से लौटने के बाद सतीश जी ने खड़ी मूर्तियों का निर्माण शुरू किया एक मूर्ति को बनाने के समय आपके विचार शुरू नहीं होते वह अपनी भावना को रूप में रूपांतरित कर देते हैं, जिसका कोई शीर्षक निर्धारित नहीं होता है। उन्होंने स्पष्ट किया बच्चा पैदा होने के बाद ही उसके नाम के बारे में सोचते हैं। आपके अनुसार मूर्तिकलाके लिए एक विशेष माध्यम की आवश्यकता होती है। अपने लम्बे जीवन काल में उन्होंने जली हुई लकड़ी, फाइवर ग्लास, चीनी, मिट्टी और कांच में कार्य किया है। जैसा कि उन्होंने बताया कि जली हुई लकड़ी के रंग व आकार ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया और तुरन्त उन्होंने सोचा कि इस माध्यम में काम किया जाना चाहिए, परन्तु यह नहीं सोचा था कि इसे क्या आकृति प्रदान करनी है।

इसके पश्चात् आपने धातु में कार्य किया और उसमें संयोजन करते रहे और एक दशक से अधिक समय तक कार्य किया। मूर्तिकला के तीसरे चरण में ग्रेनाइट के रंगों और बनावट की खोज करना शुरू कर दिया। फिर गुजराल जी ने पत्थर को त्याग कर अपनी मूर्तियों के लिए कांस्य को चुना, पहली बार आपने रूपों को मिट्टी में ढाला। देवी देवताओं, आदिवासी रूप, ज्यामितिय, यांत्रिक मनुष्य, उपकरणों आदि रूपी उनकी मूर्तियों का विषय रही। सभी को कला के साथ संचारित किया।

सम्मान एवं पुरस्कार– सतीश गुजराल जी को कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्म विभूषण मेक्सिको का लियोनार्डो द विंसी और वेल्जियम के राजा का आर्डर ऑफ क्राउन पुरस्कार शामिल हैं। 1989 में इन्हें प्दकपंद प्देजपजनजम वि तबीपजमबजनतम तथा दिल्ली कला परिषद् द्वारा सम्मानित किया गया। आपने अनेक होटलों में आवासीय भवनों, विश्वविद्यालयों, उद्योग स्थलों और धार्मिक इमारतों की मनमोहक वास्तु परियोजना तैयार की। नई दिल्ली के बेल्जियम दूतावास के भवन की वास्तु रचना से आपको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। इस इमारत को 20वीं शताब्दी की 1000 सर्वश्रेष्ठ इमारतों की सूची में स्थान दिया गया। तीन बार कला का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं दो बार चित्रकला के लिए और एक बार मूर्तिकला के लिए। विभिन्न कलाओं में अपनी नैसर्गिकता के लिए गुजराल कई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

परिवर्तन श्री सतीश गुजराल की कला को परिभाषित करता है, चाहे वह उनकी पेटिंग हो या मूर्ति। उनके अनुसार हमें कभी शैली का गुलाम नहीं होना चाहिए। उनका कहना है कि मैं हमेशा अपनी छवि में रहता हूँ, जब आप एक बार बदलना सीखते हैं, तब आपको कोई रोक नहीं सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमर नाथ झा पुस्तकालय, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ।
2. राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0, लखनऊ।
3. ललित कला केन्द्र, अलीगंज, लखनऊ।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14